# श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

**प्रथम वर्ष - अभ्यास - १**

जून 2026

गुणांक - १००

## प्रश्न - पत्र

सूचना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा। २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें। ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे। ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोडना नहीं है, जोडने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे। ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरुरी है, आगे-पीछे आए पेपर जांचे नही जायेंगे। ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है। ६. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगें, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा।

**प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो -** २०

१. दैवयोग से ताड़ का फल टूटकर लडके पर पड़ा और लड़का मृत्यु को प्राप्त हुआ यह पहला.............. इस अवसर्पिणी में हुआ।
२. शुभ कर्म बंध में निमित्तरुप जीव के शुभ .................... वह भाव पुण्य है।
३. प्रतिहार्य याने जो .................. दरवाजे के द्वारपाल की तरह प्रभु के पास रहते हैं।
४. ........................ सभी जीवों का समावेश हो जाता है।
५. मैं देवलोक से च्युवुंगा ऐसा देव जानते थे परंतु ................. प्रभु नहीं जानते ओर मेरा च्यवन हो गया है ऐसा प्रभु जानते हैं।
६. प्रमादवश ................... के बिना हो जो प्राणी अपने मानवभव को नष्ट कर देते हैं, उनके लिये फिर से मानव भव की प्राप्ति दुर्लभ है।
७. जीवतत्व से विपरीत चेतना रहित जडस्वभाववाला ............... है।
८. .................. के क्षय होने से भारी हलका या ऊँच नीच पन का व्यवहार रहता नहीं।
९. पाप अगर लोहे की बेडी है तो पुण्य ..................... बेडी है।
१०. ................कुलकर ने "हाकार, माकार" नामक दोनों नीतियों को न मानने वालों के लिये "धिक्कार" नीति की प्रवर्तना की।
११. कर्मो के देशक्षय में कारणरुप बनते जीव के अध्यवसाय वह ................. है।
१२. अनुत्तरवासी देवों को भी .................... के अभाव में भौतिक सुख की पराकाष्ठा में भी दुःख के वेदन होता है।
१३. नरभव पाने के बाद जिसने व्यर्थ गंवाया उसके लिये पुनः ..................... की प्राप्ति दुर्लभ है।
१४. संवर निर्जरा और मोक्ष जीव के ............... स्वरुप है।
१५. ........................ के क्रोध को ठंडा करने के लिये हमें अपनी मर्यादा में रहना पडेगा।
१६. इस अवसर्पिणी के ..................को पूर्ण होने में अभी पल्योपम का आँठवा भाग शेष था, तब क्रम से सात कुलकर हुए।
१७. .................. जीवो में द्विइन्द्रिय से पंचेन्द्रिय जीवों का समावेश होता है।
१८. जीवमात्र के जीवत्व के ...............शुभ भावना में तीर्थंकरत्व जैसी महान वस्तु भेंट स्वरुप मिलने का सामर्थ्य है।
१९. हिंसा आदि क्रियाओं द्वारा जो नये कर्म उपार्जन के कारण तथा मार्ग हैं, वो.................... हैं।
२०. .............. जीवों के प्रति दया करुणा की भावना ने अइमुत्ता बाल मुनि को केवल्य की भेंट प्रदान की।

**प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो -** १५

१. अरिहंत परमात्मा के उपदेश का सार क्या है ?
२. विविध प्रकार के मिट्टी पाषाण और खदान के जीवों को क्या कहा जाता है ?
३. मोहनीय कर्म के क्षय होने से कौन सा गुण प्राप्त होता है ?
४. भगवान की वाणी कौनसे राग में होती है ?
५. विमलवाहन कुलकर ने कौन सी दंड नीति प्रवर्तित की ?
६. नवकार मंत्र में देवस्वरुप कौन है ?
७. अनंतवीर्य इस गुण की प्राप्ति कौन से कर्म के क्षय से होती है ?
८. राधा वेध में जो सफल होगा उसे ही राजकुमारी दूंगा ऐसी प्रतिज्ञा किस नगर के राजा ने की थी ?
९. उपादेय याने क्या ?
१०. ऋषभकुमार का राज्याभिषेक किसने किया ?
११. किस कारण से तीर्थंकर परमात्मा लोकालोक के सर्व स्वरुप को सभी प्रकार से जानते हैं ?
१२. सिध्द की स्थिती क्या कहलाती हैं ?
१३. द्रव्य बंध में कारणरूप बनते जीव के अध्यवसाय को क्या कहा जाता है ?
१४. संवर और निर्जरा के द्वारा सभी कर्मो का क्षय होना कौन सा तत्व है ?
१५. महान ऐसे मानवभव और विरती धर्म को पाने के बाद भी धर्म आराधना से वंचित रह जाते हैं, वो क्या कहलाते हैं ?

**प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो -** १०

१. प्पणासणो २) रयण ३) मुक्खो ४) थावरा ५) पूव्वसूरिहिं ६) मुसा ७) वासीय ८) पइवं ९) फलिह १०) नवतत्ता
११) पुढवी १२) सव्वेसिं १३) अब्भय १४) अेगविह १५) असो १६) कमेणेसिं १७) छव्विहा १८) भेया १९) नायव्वा २०) अबुह

**प्रश्न नं. ४ जोडियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) -** १०

| A | B |
|---|---|
| १) नवकार | १) आठ प्रातिहार्य |
| २) अरिहंत | २) चंद्र दर्शन |
| ३) श्वास में कमल की सुगंध | ३) अशुभ कर्म का आश्रव |
| ४) कछुआ | ४) तेइन्द्रिय |
| ५) तेउकाय | ५) पंच मंगल सूत्र |
| ६) पाप | ६) अरुपी |
| ७) जीव | ७) सहजातिशय |
| ८) दीमक | ८) स्थावर |
| ९) संवर | ९) चौरेन्द्रिय |
| १०) मक्खी | १०) रुपी |

**प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो -** १०

१. नवतत्व में जीव के भेद कितने ?
२. अरिहंत परमात्मा ने कितने कर्मो का क्षय किया है ?
३. नवकार मंत्र कितने साग के पापो का नाश करता हैं ?
४. समवसरण में अरिहंत प्रभु के चारों ओर कितने योजन तक नये रोग नहीं होते ?
५. स्थावर जीवों के भेद कितने हैं ?
६. अरिहंत की वाणी कितने तत्व को पुष्ट करती है ?
७. इस अवसर्पिणी के तीसरे आरे में कुल कितने कुलकर हुए ?
८. काय की अपेक्षा से जीव के प्रकार कितने ?
९. नव-तत्व के भेदों में अरुपी भेद कितने ?
१०. ऋषभदेव प्रभु कौन से भव में जीवानंद वैद्य थे ?

**प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही ( ✔ ) हैं या गलत (×) बताओ -** १०

१. ऋषभदेव प्रभु के चार कल्याणक अभिजीत नक्षत्र में और एक कल्याणक उत्तराषाढा नक्षत्र में हुआ ।
२. जीव विचार के रचयिता श्री शांतिसूरिश्वरजी हैं ।
३. नवकार मंत्र का एक अक्षर सात सागरोपम के पापों का नाश करता है ।
४. कर्म के देशक्षय में कारण रुप बनता जीव का अध्यवसाय वह भाव मोक्ष है ।
५. चौथे भव में श्री ऋषभदेव महाबल नाम के राजा थे ।
६. इच्छानुसार एक स्थान से दूसरे स्थान तक जा सकते हैं, वो त्रस जीव कहलाते है ।
७. अरुपीपन नामकर्म के क्षय से प्राप्त होता है ।
८. तीर्थंकरों की वाणी प्रयोजन रहित होती है ।
९. मच्छर तेइन्द्रिय जीव है ।
१०. अशोक वृक्ष अरिहंत देव के देह से बारह गुना ऊँचा होता है ।

**प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो -** १०

१. वह अपने परिवार को शरदपूनम के चंद्र के दर्शन न करा पाया ।
२. समस्त लोक को अलोक और अलोक को लोक कर सके ऐसी शक्ति स्वाभाविक रुप से सिध्दो में रही हुई है ।
३. हम पानी का ग्लास पूरा भरते हैं, आधा पीते हैं, आधा फैंक देते हैं ।
४. हे समृद्धिवंत ! हे कल्याणकर देव ! आप की जय हो विजय हो ।
५. पूर्व दिशा के सन्मुख प्रभु बैठते है, बाकि तीन दिशा में तीन प्रतिबिम्ब व्यंतर देव स्थापित करते हैं ।
६. ज्ञान दर्शनादि भाव प्राणों को धारण करे वो भाव जीव है ।
७. इस हाथी का रंग श्वेत था अतः उस युगलिया को अन्य युगलिया विमल वाहन कह कर बुलाने लगे ।
८. जहाँ जीव है वहाँ चैतन्य है, जहाँ चैतन्य है वहाँ जीव है ।
९. जीव मात्र का जीवत्व अमुल्य है, उसका मुल्य कभी भी नहीं लगा सकते ।
१०. मुझे ज्यादा कुछ नहीं चाहिये, बस हररोज भरपेट भोजन मिल जाये ऐसी कुछ व्यवस्था कर दो ।

**प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ -** १५

१. नवकार मंत्र का महिमा २. जीवों के भेद ३. हाकार दंडनीति
४. मानवभव की दुर्लभता किसी एक दृष्टांत के साथ ५. रुपी - अरुपी

**उत्तर पत्र नीचे लिखे पते पर भेजिए :**

शत्रुंजय अेकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१ जिल्हा : जलगांव,